

नदीभः ४। अस्तु गुणाः। तिक्तवम्। कटु-  
त्वम्। अस्तु प्रदत्तवम्। गुरुत्वम्। वातलत्वम्।  
कफदत्तवम्। रुचत्वम्। कापायत्वम्। विषदोष-  
नाशितवच। इति राजगिर्वेषः।

नदीमालकः, चिः, (नदी मातैव नोविका यस्तु।  
कपः) नदमुख्यस्त्रीहिपालितदेशः। इत्य-  
मरः। २। १। १२।

नदीवदः, पुं, (नदा वदः।) वदुरः। इति ग्रन्थ  
माला। वांक इति भावाः।

नदीवदः, पुं, (नदीमोपजातो वदः।) वटो-  
दवः। इति राजगिर्वेषः।

नदीज्ञः, चिः, (नदी ज्ञातीति। ज्ञा+“सुपि-  
शः”) ३। ४। ५। इति कः। “निनदीभ्या ज्ञाते:  
कोश्यते।” ८। ३। ८। ९। इति वदत्वम्।) कद्य-  
वगाहनदेशः। नदीज्ञानकृपाः। इति भद्र-  
टीकार्या पुरुषोकार्यः। नदीज्ञः। इति  
पुरुषोत्तमः। यथा,—

“ततो नदीज्ञान् परिकारु गिरिशान्।”  
इति भद्रिः।

नदीसञ्चर्जः, पुं, (नदा; सञ्च इव। नदीतौरचात-  
त्वादस्य तथात्वम्।) अर्चनुनदेशः। इत्यमरः।  
२। ४। ४५। (पर्यायोत्त्व यथा,—  
“कक्षभौर्जुनामाखो नदीसञ्चर्ज कोर्णितः।  
एक्कर्णरुदच्छ वीरच घवतः क्षुतः।”)  
इति भावप्रकाशस्य पूर्वस्तुते ग्रन्थसे भागी।)

नदेशी, ज्ञी, (नदी भवा। “नदादिभ्यो एक्।”  
४। २। ४७। इति एक्। एषोदरादिलात् इत्यः।)  
नादेशी। भूमिज्ञम्। इति ग्रन्थचित्रिका।

नदः, चिः, (नहते संति। नह+हः।) वहः।  
(यथा, इतिरूपे। ४। ३। १०।  
“दिवेच वचेन्द्रादा दिवेचेवोक्तिते धर्मेः।”)  
उद्दृशः। इति मेदिनी। चे, ६।

नदौ, ज्ञी, (नहते नदया। नह+हाजीति इन्।  
ततो द्वैप।) चम्मरञ्जः। इत्यमरः। ४। १०। ४८।  
(यथा, प्रदुनविजये चतुर्थाङ्के।  
“अचापि शिग्भुविपुलकलवसित-  
वह्यावनहुद्देशो न च तं स्तरामि।”)

नदाज्ञः, पुं, (नदा आज्ञ इव।) वस्त्रहिका-  
दवः। इति राजगिर्वेषः।

नदुत्तदः, चिः, (नदा उत्तदः।) नदीकर्त्तु-  
कृत्तदस्तु। तदूपभूखक्षस्य चर इति चहा  
इति च भावा। नदुत्तदाभूमिक्षु यस्ताविक-  
कारे जाता तस्यैव भवति। यथा,—

“नदुत्तदा राजदत्ता यस्तु तस्यैव या मही।  
अन्यथा न भवेत्ताभी नरादी राजदेविकः।  
चर्योदयी जीवनक्ष देवराजवधार्मिक्षाम्।  
तस्यात् सर्वेषु कार्येषु ततुहतं न विचालयेत्।”

इति विवादचिन्तासमिग्निविवादरवाकरवैर-  
मित्रोदयप्रभतिग्न्यस्त्रितवयनम्।

नन्दा, [ ऋ ] ज्ञी, (न नन्दति तुष्टति सेव-  
यापि। नन्द+नन्द+“नन्दि च नन्दः।” उक्तो  
२। ८। ८। इति कर्तु। केवलिकातेन उद्ग-

भावः।) भर्तुभगिनी। नन्द इति भावा।  
ततुपर्यायः। नवान्दा र नन्दिनी इ नन्दा ४  
पतिस्त्रिया ५। इति ग्रन्थरवाली।

नन्दा, [ ऋ ] ज्ञी, (न नन्दति सेवयापि।  
नन्द+“नन्दि च नन्दः।” उक्ता २। ८। ८। इति  
कर्तु उद्गिष्ठ।) नन्दा। इति ग्रन्थरवाली।  
(यथा, उद्गिष्ठे। १०। ८। ४। ४।

“सम्बाद्यो वद्युरे भव सम्बाद्यो वद्यु भव।  
ननाहरि सम्बाद्यो भव सम्बाद्यो अधिदेव्या।”)  
नन्द, ज्ञ, (न नन्दति प्रेरयतीति। उद्ग+मितद्वादि-  
त्वात् हु।) प्रश्नः। एक्षा। अवधारणम्।  
(यथा, उद्गुणे। १। १। १०।

“उपपत्तं ननु शिर्यं सप्तस्त्रिये उप्य यस्तु मे।  
देवीर्णां मातृद्वैष्वाच प्रतिदृष्टा लभापदाम्।”)  
निष्ठयः। (यथा, महाभारते। १३। ६। ११।  
“लोको देवं समाजोक्त उदासीनो भवेत्तु।”)  
अनुज्ञा। (यथा, शिशुपालवधे। ६। १। १।

“ननु सम्बिशेति सुड्गोदितया  
चपया न किञ्चन किलाभिहये।”)

अनुमतिः। अनुज्ञा। वाक्यनम्। आमन्त्र-  
यम्। समोधनम्। (यथा, कुमारे। ४। १२।  
“विपुरो च्यतनातिसर्वज्ञात्  
ननु स्त्री प्रापय पवुरुणिकम्।”)

रघुसुदाहरणानि यथा,—

“प्रश्ने वलधेयामहे। अवधारणे ननु गच्छामः।  
अनुज्ञायां वर्णनेण चायताम्। अनुवये ननु  
चक्षि। प्रश्नैद। आमन्त्रये ननु चेच। विरो-  
धोक्तिः। इवभरभरतौ। विनियहः। अनु-  
प्रश्नः। परज्ञतिः। अविकारः। सम्भमः। इति  
मेदिनी। नै, ४४। आदेषः। प्रवृत्तिः। वाक्या-  
रम्भः। इति रैमधनः। ६। १०८। उत्-  
प्रेक्षालङ्कारन्यज्ञकम्। यथा,—

“मन्ये श्रहं भृतं गूर्गं किंवा प्रायोद्यनुवेश्य च।  
ननु नाम हि जानामि उत्प्रेक्षालङ्कारनि च।”

इति कायचित्रिका।

नशुष, ज्ञ, विरोधोक्तिः। इत्यमरः। ६। ४। १४।  
नशुषेति चसुहितं विरोधवप्ने नशुष्वन्तो विरो-  
धोक्तौ चकारात् नशुषेति वा। इति भरतः।

नन्दः, पुं, (नन्दतीति। नन्द+प्रशादृष्ट।)  
विष्णुः। यथा। “आनन्दो नन्दनो नन्दः।” इति  
महाभारते। १३। १४। ४। ४। नरपतिमेषः।  
स तु महानन्दितः चत्रियवशानः। (यथा,  
भागवते। १२। १। ७—१।

“महानविद्युतो राजन्। श्रद्धागमीङ्गिवो वली।  
महापशुपतिः कचित्पन्दः चत्रियवशानकृत्।  
ततो शृपा भविष्यति शूद्रप्रायाच्चधार्मिकाः।  
स एकच्छ्रवां शृपिवीमनुलङ्घितश्चावनः।  
श्राविष्यति महापश्चो दितीयै इव भागवः।  
तस्य चादी भविष्यति शुमाल्यप्रसुखाः सुताः।  
य इमां भोस्यन्ति महीं राजानश्च श्रतं समाः।  
नव नन्दान् दिवः। कचित् प्रपत्तानुद्दिविति।  
तेवामभावे जगतीं मौर्यं भवेति वे कलौ।”)

आनन्दः। निधिविशेषः। इति पुराणशब्द-  
रवालौ। गोपमेहः। च च श्रीकृष्णपिता।  
नन्दः पुरा द्वीजनामा वसुरासीत्। यथा,—  
“द्वीजो वद्युना प्रवरो धरया वह भावेद्या।  
करियमाण आदेशान् वस्त्रवक्षसुवाच इ।  
जातयोर्नै महादेवे भवति विन्देन्द्रे इरौ।  
भक्तिः स्वात् परमा लोको यथाऽन्ते दुर्गतिन्द्रेत्।  
स्वस्त्रीबुत्तः स भगवान् वक्ते द्वीजो महावशः।  
जग्ने नन्द इति खातो यथोदासा च धराभवत्।”  
इति श्रीभागवते। ३०। ८। ४८—५०।

वेणुविशेषः। यथा,—  
“महानव्यस्तथा नन्दो विजयोऽथ चत्रियवा।  
चत्रार उत्तमा वंशा मातस्त्रत्वनिमयताः।  
दशाहूलो महानन्दो नन्द एकादशाहूलः।”  
इति सन्धीतदामोदरः।

(नन्दङ्गविशेषः। यथा, महाभारते। ५०। २। ४। ५।  
“वद्वद्वी चाच विषुलौ दिव्यौ नन्दोवनन्दकौ।”)  
स्वन्दस्यातुचरविशेषः। इति महाभारते। ६।  
४५। ६। १। नागविशेषः। इति महाभारते।  
५। ३०६। १२। वज्रेश्वरसातुचरविशेषः।  
यथा, भागवते। ४। ७। ४२।

“इद्यो यद्योतार्हजसाद्वदोत्तमं  
वशेषं विचक्षये परं शुद्धम्।  
शुनन्दनन्दाद्यादुग्रेवृत्तं सुदा  
यवन् प्रपेदे प्रवतः ज्ञाताङ्गिः।”

भृतराहस्य पुत्रावामवतमः। इति महा-  
भारतम्। १। १०। ६। ६। मदिरागमेकातो  
वहुदेवस्य पुत्रविशेषः। इति भागवतम्। ६।  
२। ४। ४८। कौचदीपल वैष्णवतविशेषः।  
इति भागवतम्। ५। २०। ५। १। यताम-  
स्यातो इतकमीमांसायायन्यप्रवैता। यथा,—  
“अभिवन्द चग्न्यवद्यपद्यन्दविनायकम्।  
पुत्रोकरवयमीमांसां शुद्धते नन्दप्रवैतः।”)

नन्दकः, पुं, (नन्दतीति। नन्द+सुष्णु।) विष्णु-  
स्वदः। इत्यमरः। १। १। १। १०। (यथा,  
द्विविशेष। १२। ४। ४।

“रथाङ्गेनाय श्वार्णेय गदया नन्देन च।  
प्रहरादद्वय गदवृद्धो भूला जगदेवन्।”)  
मेकः। इति त्रिकालविशेषः। इवंसे शुद्धपालकै  
च च। इति मेदिनी। नै, १०६। तत्त्वपिता  
आनन्दः। आनन्दकारकृतः। (नागविशेषः  
इति महाभारतम्। ५। १०३। १। १। नन्द-  
स्वातुचरविशेषः। इति महाभारतम्। ६।  
४५। ६। ६। इतराहस्य पुत्रविशेषः। इति  
महाभारतम्। १। १०७। ३। १।

नन्दकः, ज्ञी, पितृपती। इति ग्रन्थचित्रिका।  
नन्दकः, [ नृ ] पुं, (नन्दकः। राज्योद्यवस्थेति।  
नन्दक+द्विः।) विष्णु। यथा,—  
“द्वृक्षभग्नकौ चक्षो श्वार्णेवना गदावतः।”  
इति महाभारते श्राविष्यत्वं।  
नन्दगोपिता, ज्ञी, (नन्दाय इवांशं गोपिता  
रचिता।) राजा। इति ग्रन्थचित्रिका।